PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

अक्तूबर 2007 ISSUE 1007 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

क्या आप कुछ भूल रहे हैं-आप के कर्तव्य अपने माता-पिता के प्रति?

कहते हैं, माता–पिता इस धरती पर भगवान् का स्वरूप हैं। पर क्यों? क्योंकि एक माँ ही है, जिसने उस बच्चे को जन्म देने से पहले उसे नौ महीने अपने गर्भ में रखा, उसकी देखभाल की, घोर कष्ट सहते हुए उसे इस धरती पर जन्म दिया और तत्पश्चात् उसका पालन-पोषण किया। माता और पिता के सम्बन्ध से ही तो एक शिशु की स ष्टि होती है। इसलिए वे अपने बच्चे के सह-स ष्टिकर्ता हैं पर जीवन देने व लेने का मूल अधिकार केवल ईश्वर का है, जो पूरे विश्व का स ष्टिकर्ता है। वे भगवान-स्वरूप इसलिए भी हैं क्योंकि जिस प्रकार ईश्वर हमें सब कुछ प्रदान करता है, उसी प्रकार माता-पिता अपने बच्चे पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं और बच्चों को जिन मूल चीज़ों की ज़रूरत होती है, जैसे

खान-पान, कपड़े, घर, शिक्षा, सभ्यता, प्रेम, सुरक्षा, आचार-विचार, चिकित्सा, ज्ञान-विवेचन, मार्गदर्शन इत्यादि, उन सब को वे ही अपना धर्म व प्राथमिक कर्तव्य समझकर पूरी करते हैं चाहे इसके लिए उन्हें कितना ही कष्ट क्यों न झेलना पड़े, कितना परिश्रम क्यों न करना पड़े, कुछ भी त्यागना या

खोना क्यों न पड़े। एक परिवार ही एक बच्चे का प्रथम विद्यालय व चिकित्सालय है जिसमें उसका पालन–पोषण होता है, जहाँ उसका प्रेम से ख्याल रखा जाता है, ज्ञान, अनुभव व सद्गुण मिलते और इस प्रकार धीरे–धीरे शारीरिक व मानसिक विकास होता है। ऐसे माता–पिता जिनके लिए उनके बच्चे अपने जीवन से भी अधिक मूल्यवान हैं, अपने बच्चों से उनके प्रति प्रेम, आज्ञाकारिता व आदर-सम्मान की अपेक्षा रखेंगे और वास्तव में वे उसके पूरे–पूरे हकदार हैं, हालाँकि वह बच्चों को इन बातों के लिए, उनके प्रति निरपेक्ष प्रेम व उदारता के कारण, बाध्य नहीं करते। वे बस हर हालत में अपने बच्चों की खुशहाली चाहते हैं जिसमें उन्हें खुशी मिलती रहती है।

उनके इन सब उपकारों का बदला उन्हें क्या देकर चुकाया जा सकता है? कुछ भी नहीं। उनके आशीर्वाद व दुआओं का स्थान कौन ले सकता है? कोई भी नहीं। पर बच्चों का उनके प्रति आदर व प्रेम, आज्ञाकारिता, क तज्ञता व सेवा–भाव ही उन्हें आनन्द, शान्ति व सन्तुष्टि दे सकती है। बच्चों के जीवन में सफलता, उनकी उपलब्धियाँ व उनकी अन्य लोगों द्वारा प्रशंसा माता–पिता का गौरव व आनन्द बढ़ाती है। यही तो इस प्रेम की महानता है, जिसमें कोई कपट व दोष नहीं, अस्थिरता व चंचलता नहीं, और जो समय या स्थान द्वारा बाधित नहीं है। इसलिए सभी बच्चों का यह स्वाभाविक व धार्मिक कर्तव्य बनता है कि **वे अपने माता-पिता का आदर करें।** यह नियम पिता परमेश्वर द्वारा दिये दस नियमों में **चौथे स्थान** पर है और होना भी चाहिए क्योंकि ईश्वर के बाद आदर, श्रद्धा व सेवा-सत्कार का प्रथम स्थान व श्रेय माता-पिता को ही जाता है। अपने स ष्टिकर्ता ईश्वर के प्रति कर्तव्य के बाद एक मनुष्य का कर्तव्य सर्वप्रथम अपने माता-पिता के प्रति ही बनता है। और यही एक नियम है जिसके साथ ईश्वर एक प्रतिज्ञा भी जोड़ते हैं – जो इस प्रकार है – **जिससे तुम्हारा कल्याण हो और तुम बहुत दिनों तक प थ्वी पर जीते रहो जिसे तुम्हारा प्रभु-ईश्वर तुम्हें प्रदान करेगा।(निर्गमन 20:12)** पवित्र बाईबिल प्रवक्ता–ग्रन्थ में इसी प्राकृतिक व नैतिक नियम की पुष्टि व विश्लेषण करता है। और इस पीढ़ी के बच्चों को इन बातों के महत्व व अर्थ को जानने की सख्त ज़रूरत है।

(शेष भाग प ष्ठ 2 पर)★

सन्त यूदस के आदर में स्तुति विनती!

पर्व दिवस- अक्तूबर 28

हे प्रभु दया कर।
हे प्रभु दया कर।
हे ख्रीस्त दया कर।
हे ख्रीस्त दया कर।
हे प्रभु दया कर।
हे प्रभु दया कर।
हे ख्रीस्त हमारी विनती सुन।
हे ख्रीस्त हमारी विनती पूरी कर।
स्वर्गवासी पिता ईश्वर, **हम पर दया कर।**
पुत्र ईश्वर दुनिया के मुक्तिदाता, **हम पर दया कर।**
पवित्रात्मा ईश्वर, **हम पर दया कर।**
पवित्र त्रित्व एक ही ईश्वर, **हम पर दया कर।**
संत मरिया, **हमारे लिए प्रार्थना कर।**
आपका अनुवाक्य- **हमारे लिए प्रार्थना कर।**
हे सन्त यूदस, -
येशु और मरिया के सम्बन्धी अनुवाक्य
जिसे इस पृथ्वी पर येशु और मरियम को देखने और उनके साथ रहने का सौभाग्य मिला अनुवाक्य
जिसे एक महान सन्त बनाया गया

(शेष भाग प ष्ठ 2 पर)☛

यदि हम ईश्वर में विश्वास करेंगे, जिसने हमारे प्रभु येशु को म तकों में से जिलाया, तो हम भी विश्वास के कारण धार्मिक माने जायेंगे।(रोमियों 4:24)

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)☛

जिसे प्रभु द्वारा पैर धुलाये जाने का सम्मान मिला

जिसने अन्तिम भोजन के बाद स्वंय प्रभु येशु के हाथ से परमप्रसाद ग्रहण किया

जिसके प्रिय स्वामी ने दुःख सहकर मृत्यु प्राप्त की और मृतकों में से पुर्नजीवित होकर स्वर्गारोहण द्वारा सान्त्वना प्रदान की जो पेन्तेकोस्त के दिन पवित्रात्मा से भरपूर हुआ

जिसने बहुत से लोगों को विश्वासी बनाया

जिसने पवित्रात्मा की शक्ति द्वारा बहुत से अद्भुत चमत्कार किये

जिसने एक अन्धविश्वासी राजा को शारीरिक व आध्यात्मिक मृत्यु से बचाया

जिसने शैतान के पूजनीय स्थानों पर शान्ति स्थापित की

जिसने एक कमज़ोर राजकुमार को उसके शक्तिशाली शत्रु के साथ शान्ति कायम रहने की भविष्यवाणी की

जिसने खतरनाक सर्पो से मनुष्य को हानि पहुँचाने की शक्ति छीन ली

जिसने अधर्मियों की धमकियों को न सहते हुए साहस के साथ ख्रीस्तीय शिक्षा ली

जिसने अपने अति पवित्र महिमामय स्वामी के प्रेम के कारण कष्ट झेले

आपका अनुवाक्य- **हम तुझ से माँगते हैं, हमारी सुन।**

कि तू हमारे पवित्र धर्मगुरू की रक्षा तथा पवित्र कलीसिया में शान्ति और एकता स्थापित करेगा

कि सभी अधर्मी और अविश्वासी सत्य विश्वास की ओर विमुख हों,

कि हमारे हृदयों में विश्वास, आशा और दयालुता की वृद्धि हो,

कि हम सभी बुरे विचारों से अलग रहें और शैतान के फंदे से बचे रहें,

कि तू उन सभी का सहायक व संरक्षक बने जो तेरा आदर करते हैं,

कि तू हमें सभी बुराईयों और बुराई के अवसरों से बचायेगा,

कि तू हमें हमारी मृत्यु के समय शैतान व उसकी दुष्टात्माओं के प्रकोप से बचायेगा,

हे ईश्वर के मेमने, जो संसार के पाप हर लेता है - *हमें क्षमा कर।*

हे ईश्वर के मेमने, जो संसार के पाप हर लेता है - *हमारी सुन।*

हे ईश्वर के मेमने, जो संसार के पाप हर लेता है - *हम पर दया कर।*

हे सन्त यूदस, हमारे लिए प्रार्थना कर

-कि हम ख्रीस्त के प्रतिज्ञाओं के योग्य बन जायें।

हम प्रार्थना करें - हे प्रभु, तूने अपने सन्त यूदस के द्वारा हमें अपने नाम का ज्ञान दिया है। हमें ऐसी कृपा प्रदान कर कि हम सभी गुणों में आगे बढ़ते हुए उसकी अनन्त महिमा को सार्थक बना सकें और इस महिमा की स्थिरता द्वारा हमारी पवित्रता में बढोत्तरी होती जाये। उसी हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

★*(पृष्ठ 1 का शेष भाग)*

"पुत्रों! पिता की शिक्षा ध्यान से सुनो। उसका पालन करने में तुम्हारा कल्याण है। प्रभु का आदेश है कि सन्तान अपने पिता का आदर करे; उसने माता को अपने बच्चों पर अधिकार दिया है। जो अपने पिता पर श्रद्धा रखता है, वह अपने पापों का प्रायश्चित करता है और जो अपनी माता का आदर करता है, वह मानो धन का संचय करता है। जो अपने पिता का सम्मान करता है, उसे अपनी ही सन्तान से सुख मिलेगा और जब वह प्रार्थना करता है, तो ईश्वर उसकी सुन लेगा। जो अपने पिता का आदर करता है, वह दीर्घायु होगा। जो अपनी माता को सुख देता है, वह प्रभु का आज्ञाकारी है। जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है, वह अपने माता-पिता का आदर करता और उनकी सेवा वैसे ही करता है, जैसे दास अपने स्वामी की सेवा करता है। वचन और कर्म से अपने पिता का आदर करो, जिससे तुम को उसका आशीर्वाद प्राप्त हो। पिता का आशीर्वाद उसके पुत्रों का घर सुदृढ़ बनाता है, किन्तु माता का अभिशाप उसकी नींव उखाड़ देता है।

अपने पिता के अपमान पर गौरव मत करो, उसका अपयश तुमको शोभा नहीं देता। पिता का सम्मान मनुष्य का गौरव है और माता का अपयश पुत्र को शोभा नहीं देता। पुत्र! अपने बूढ़े पिता की सेवा करो। जब तक वह जीता रहता है, उसे उदास मत करो। यदि उसका मन दुर्बल हो जाये, तो उस से सहानुभूति रखो। अपने स्वास्थ्य की उमंग में उसका अनादर मत करो; क्योंकि पिता की सेवा-शुश्रूषा नहीं भुलाई जायेगी, वह तुम्हारे पापों का प्रायश्चित और तुम्हारी धार्मिकता समझी जायेगी। लोग तुम्हारी विपत्ति के दिन तुम को याद करेंगे और तुम्हारे पाप धूल में पाले की तरह गल जायेंगे। जो अपने पिता का त्याग करता, वह ईश-निन्दक के बराबर है। जो अपनी माता को दुःख देता है, वह ईश्वर द्वारा अभिशप्त है।"(प्रवक्ता-ग्रन्थ 3:2-18)

समय आ गया है कि सभी इस वचन की गहराई को समझें और अपने—अपने कर्तव्यों को भली—भान्ति समझें। नहीं, तो नतीजा वही होगा जैसे हम रोज़ अखबारों में पढ़ते या समाचारों में देखते व सुनते हैं— परिवारों में फूट, बँटवारा, झगड़े, लूटमार, धोखेबाज़ी, अन्याय, अत्याचार, हत्याँए इत्यादि। सभी मनुष्य भाईचारे से रहें न कि लाचारी से; सभी एक-दूसरे का दुःख बाँटें न कि घर, ज़मीन व जायदाद का बँटवारा कर अलग हो जायें; सभी एक-दूसरे को आदर-सम्मान दें व प्रशंसा करें न कि किसी का अपमान या अपयश कर दुश्मनी मोल लें; सभी एक-दूसरे की निःस्वार्थ सेवा व मदद करें, न कि दूसरों का इस्तेमाल कर हर समय अपना फायदा व मतलब निकालें।

*और यह सब सदाचार के कार्य शुरू होंगे स्वंय **अपने घर से ही, जो एक समाज का मूल तत्व है,** जहाँ पर सभी सद्गुणों का उद्गम है, जहाँ पर एक व्यक्ति के चरित्र की नींव रखी जाती है। अपने घर में अपने बूढ़े माता-पिता व बीमार, कमज़ोर सम्बन्धियों की आप अच्छी तरह से देख-रेख करें। आप लापरवाह व आलसी न बनें, पर उन्हें सान्त्वना दें, ढ़ारस बँधायें। उनकी परिस्थिति को अनदेखा न करें पर उनकी सहायता के लिए तत्पर रहें। यही एक सुपुत्र की, एक अच्छे भाई की, एक सज्जन की,*

> *सब सदाचार के कार्य स्वंय अपने घर से ही शुरू होते हैं, जो समाज का मूल तत्व है, जहाँ पर सभी सद्गुणों व जीवन के मूल्यों का उद्गम है और जहाँ पर एक व्यक्ति के चरित्र की नींव रखी जाती है।*

*एक अच्छे नागरिक की, एक धार्मिक मनुष्य की और एक **ईश्वर के सन्तान** की पहचान है।*

"जो प्यार करता है, वह ईश्वर की सन्तान है और ईश्वर को जानता है। जो प्यार नहीं करता, वह ईश्वर को नहीं जानता; क्योंकि ईश्वर प्रेम है ...और जो प्रेम में दृढ़ रहता है, वह ईश्वर में निवास करता है और ईश्वर उस में। ...हमें मसीह से यह आदेश मिला है कि जो ईश्वर को प्यार करता है, उसे अपने भाई को भी प्यार करना चाहिए क्योंकि यदि वह अपने भाई को, जिसे वह देखता है, प्यार नहीं करता, तो वह ईश्वर को, जिसे उसने कभी देखा नहीं, प्यार नहीं कर सकता। ...वह झूठा है, जब वह यह कहता है कि मैं ईश्वर से प्यार करता हूँ और वह अपने भाई से बैर करता हो। ...हम वचन से नहीं, कर्म से, मुख से नहीं, हृदय से एक दूसरे को प्यार करें। इसी से हम जान जायेंगे कि हम सत्य की सन्तान हैं और जब कभी हमारा अन्तःकरण हम पर दोष लगायेगा, तो हम ईश्वर के सामने अपने को आश्वासन दे सकेंगे।"(1 योहन 3:18-19; 4:7-8, 16, 20-21) ◎

"जो अपने पिता पर श्रद्धा रखता है, वह अपने पापों का प्रायश्चित करता है और जो अपनी माता का आदर करता है, वह मानो धन का संचय करता है। जो अपने पिता का सम्मान करता है, उसे अपनी ही सन्तान से सुख मिलेगा और जब वह प्रार्थना करता है, जो ईश्वर उसकी सुन लेगा।"(प्रवक्ता 3:4-6)

जीवित परमेश्वर के अद्‌भुत साक्ष्य- जीवन-धाम से

15 वर्षों के बाद मिला प्रभु से सन्तान का दान

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, गुडिया, यहाँ जीवन–धाम में पिछले 2 सालों से प्रार्थना सभा में भाग ले रही हूँ। मेरी शादी राम केवल से 15 वर्ष पहले हुई थी लेकिन हमें अब तक कोई सन्तान की प्राप्ति नहीं हो सकी थी। तीन बार मुझे गर्भ ठहरा था पर तीनों बार बच्चे को बचाया न जा सका। हमने फरीदाबाद व दिल्ली के डॉक्टरों से काफी इलाज करवाया।

पिछले साल किसी महिला के बताने पर मुझे यहाँ "जीवन–धाम" में प्रार्थना के ज़रिये हो रहे चमत्कारों के विषय में पता चला। तब से मैं हर हफ्ते जीवन–धाम में आने लगी। प्रभु ने हमारी प्रार्थना सुन ली और मैं जल्द ही गर्भवती हुई। पर तीन महीने पहले डॉक्टर ने जाँच करने पर हमें यह बताया था कि बच्चा स्वस्थ है और इसलिए वह बड़े ऑपरेशन से ही होगा। इस बात को लेकर हम चिन्तित तो हुए पर हमने प्रार्थना कर सब कुछ प्रभु येशु के चरणों में सौंप दिया। जीवनदाता प्रभु–ईश्वर की कृपा से हमारे सूने परिवार में दो महीने पहले एक लड़के का जन्म बिना किसी ऑपरेशन के ही हो गया। हम आज अपने बच्चे के साथ प्रभु के इस अदभुत कार्य की गवाही देने आये हैं। प्रभु येशु की इस बहुमूल्य वरदान के लिए तथा हमारा विश्वास उन पर द ढ़ करने के लिए हम उसे करोड़ों बार धन्यवाद देते हैं। आल्लेलूया। **गुडिया - राम केवल,**

फरीदाबाद

उसकी पत्नी बाँझ थी। उसके कभी सन्तान नहीं हुई थी। प्रभु का दूत उसे दिखाई दिया और उससे यह बोला, "आप बाँझ हैं। आपके कभी सन्तान नहीं हुई। किन्तु अब आप गर्भवती होंगी और पुत्र प्रसव करेंगी।" (न्यायकर्ताओं 13:2-3)

उसके स्पर्श द्वारा मेरी 15 साल पुरानी गठिया की बीमारी एकाएक गायब हो गई!

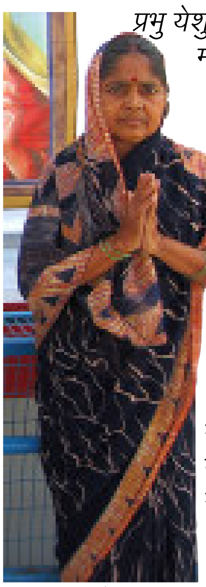

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, सुनीता देवी (उम्र–50 वर्ष), पिछले 15 सालों से शरीर दर्द से काफी परेशान थी, इतना कि मैं चलने-फिरने में लाचार होकर बिस्तर पर सालों से पड़ी हुई थी। यह दर्द मेरी एड़ी से शुरू होकर धीरे-धीरे सारे शरीर में फैल गया। बिहार में पटना एवं भागलपुर जिले में, दिल्ली में सफ्दरजंग हस्पताल व मेडिकल मे, बल्लबगढ़ इ.एस.आई. हस्पताल में इत्यादि सभी डॉक्टरों से इलाज करवाया पर कोई फायदा नहीं हुआ और उन्होंने जवाब दे दिया। इलाज पर एक लाख रूपये से भी अधिक खर्च हो गये। मेरी बेटी ही सबका खाना बनाती थी और मुझे रोटी तोड़ कर खिलाया करती थी क्योंकि मेरे हाथों की ऊँगलियाँ कड़क होकर मुड़ गई थीं और खुलती नहीं थीं। डॉक्टरों ने मुझे चावल, दही, केला इत्यादि का परहेज करने को कहा था। मेरी पाचन शक्ति भी कमज़ोर हो गई थी और अक्सर मुझे उल्टियाँ हो जाती थीं।

मेरी ऐसी हालत देखकर मेरी देवरानी के भाई ने मुझे जीवन–धाम में हो रहे चमत्कारों के विषय में बताया। मैं तब से हर इतवार प्रार्थना में शामिल होने लगी। मेरी हालत उस दिन से अधिक सुधरी जब मैं **जीवन-धाम** सैक्टर 22 में प्रार्थना में शामिल हुई। तब से मेरी ऊँगलियाँ नर्म हो गईं, मेरे घुटनों का दर्द गायब हो गया, मैंने दवाँए लेनी छोड़ दीं, मेरे घर में शान्ति और खुशी लौट आई, मेरा पेट ठीक हो गया और मैं चावल भी खाने लगी। मैं अब दवा के रूप में विश्वास के साथ केवल जीवन–धाम से आशीष किया हुआ तेल शरीर पर लगाती हूँ और प्रतिदिन प्रार्थना कर प्रभु का लॉकेट धोये हुए पानी को पीती हूँ जिससे मुझे आराम मिलता जा रहा है।

आज यहाँ स्तुति करते समय मैंने दर्शन में देखा कि बालक येशु सफेद कपड़ों में स्टेज से चल कर मेरी ओर आ रहे हैं। मेरे हाथों की ऊँगलियाँ उन्हें छूने के लिए खुल गई पर मैं उन्हें छू न सकी। तब उन्होंने मुझे उठ कर अपनी

...तुम पर, जो मुझ पर श्रद्धा रखते हो, धर्म के सूर्य का उदय होगा और उसकी किरणें तुम्हें स्वास्थ्य प्रदान करेंगी। तब तुम उसी प्रकार उछलने लगोगे, जैसे बछड़े बाड़े से निकल कर उछलने-कूदने लगते हैं।" (मलआकी 3:20)

प्रार्थना के दौरान इन लोगों को प्रभु की कृपा से बिना सहारे के चलने की शक्ति मिली, पैरों के दर्द से मुक्ति मिली!

गवाही देने को कहा। हैरानी की बात यह थी कि तभी मुझमें शक्ति का संचार-सा हुआ और मैं अचानक ही खुशी से उठ खड़ी हो गई, जो मैं अपने झुकी हुई कमर के कारण पहले नहीं कर सकती थी। मैं सीधे चलकर स्टेज पर गवाही देने के लिए आ गई। प्रभु येशु ने मुझे चंगा करके मुझे एक नया जीवन दिया है। मुझ पापी के धन्यवाद के शब्द उसकी महिमा व शक्ति का बखान करने में असमर्थ हैं। आल्लेलूया। सुनीता देवी, **फरीदाबाद**

मिस्सा बलिदान का समय:

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में

हर इतवार - शाम 6:30 बजे

प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। यहाँ पर 24 घण्टे आराधना होती है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

जीवन-धाम, फरीदाबाद कैसे पहुँचें

(प्रार्थना का समय : हर इतवार 9:30 से 1:00 बजे तक)

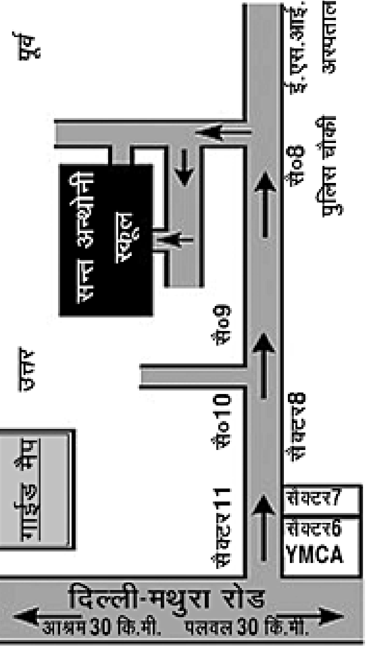

पिता जिस तरह अपने पुत्रों पर दया करता है, प्रभु उसी तरह अपने भक्तों पर दया करता है।(स्तोत्र-ग्रन्थ 103:13)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

8) प्रेरित - चरित
c) अध्याय 7-9

प्ररित–चरित के ग्रन्थ के अध्याय **7 से 9** तक से लिये गये प्रस्तुत वाक्यों में रिक्त स्थान भरें, उनकी वाक्यांश संख्या अध्याय सहित बतायें तथा उत्तर में यह भी लिखें कि ये वाक्य **पेत्रुस, साऊल, स्तेफनुस व फिलिप** में से किसने कहे?

1) मैं____ को खुला और______ के______ विराजमान मानव_____ को देख रहा हूँ।

2) ______! आप_____ हैं?

3) मैं देख रहा हूँ कि_____ की __________ से कूट-कूट कर भरे हो और______ की______ से जकड़े हुए हो।

4) __________ने ईर्ष्या के कारण ______को बेच दिया और वह _____देश पहुँचे, किन्तु ______उनके साथ रहा।

5) ____जो_____रहे हैं, क्या उसे________हैं।

6) ______! उठो।

7) आपके_____ ने किस______ पर______ नहीं किया?

8) _____! येशु_____ तुम को_____करते हैं।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

8) प्रेरित - चरित
b) अध्याय 4-6

1) निडर, मन्दिर, जनता, शिक्षा।(5:20) ईश्वर के दूत ने कहा

2) व्यक्ति, मन्दिर, मूसा, निन्दा।(6:13) झूठे गवाहों ने कहा

3) परमपावन, येशु, स्वास्थ्यलाभ, चमत्कार।(4:30) पेत्रुस और योहन के अपने लोगों ने कहा

4) ईश्वर, आप, मिटा, विरोधी।(5:39) गमालिएल ने कहा

5) तुम, सामर्थ्य, नाम, काम।(4:7) प्रधानयाजक व महायाजक-वर्ग के सभी सदस्यों ने कहा

6) अपने, आत्मा, बुद्धिमान, ईमानदार।(6:3) बारह प्रेरितों ने कहा

7) निर्णय, ईश्वर, ईश्वर, लोगों।(4:19) पेत्रुस और योहन ने कहा

8) नहीं, ईश्वर, झूठ।(5:4) पेत्रुस ने कहा

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

ङ) सही उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं ?
क्या आप दु:खी...........हैं ?
क्या आप रोगी...........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है ?

आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

मैं, येशु, तुमसे कहता हूँ, निन्यानबे धर्मियों की अपेक्षा जिन्हें पश्चाताप की आवश्यकता नहीं है, एक पश्चातापी पापी के लिए स्वर्ग में अधिक आनन्द मनाया जायेगा।(सन्त लूकस 15:7)

Edited & Published by Anthony, JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.